यदि कोई व्यक्ति आम देखता है, तो खुश हो जाता है। यदि उसे आम की सुगंध हो मिलती है, तो वह अधिक खुश होता है और अगर वह आम खाने के लिए मिलता हा वह व्यक्ति आम का सबसे अच्छे तरीके से आनंद लेता है। आम वही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ऐसे ही भगवान या खुदा एक ही है लेकिन उसके तीन रूप है जिन्हे ब्रम्ह, परमात्मा एवं भगवान कहा जाता है । ये तीनो अनंत सुख प्रदान करने वाले है। समझने के लिए इनके सुखोंका फरक क्रमशः आम के देखने, सुंघने एवं खाने के सुख जैसा है।

ज्ञानी का लक्ष्य निर्गुण निराकार ब्रम्ह  है जिसका कोई रूप नही है। योगीयों का लक्ष्य परमात्मा दर्शन है जो अपने स्वरूप में स्थित होने पर मिलता है।

एक बार भगवान राम ने अपने भक्त काग-भूशुंडी को दर्शन दिया और उनसे कहा, 'मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं। जो भी वर तुम चाहते हो उसे माँग लो- स्वर्ग, चमत्कारी शक्तियां या मोक्ष का सर्वोच्च आनंद। ' निराकार भगवान के साथ लय होना मोक्ष का सर्वोच्च आनंद है।

भक्त ने जवाब दिया, 'आप मुझे अपना दिव्य निष्काम प्यार देने की कृपा कीजिए।' प्यार भगवान राम से संबंधित है। '

राजा जनक एक संत थे जिनका मन हमेशा निराकार भगवान के आनंद में निमग्न रहता था । किसी भी सांसारिक व्यक्ति या वस्तु को उस व्यक्ति को आकर्षित करना संभव नहीं है जिसके पास दिव्य आनंद है। लेकिन

जब भगवान राम जनक की सभा में गए, तो राजा जनक यह देखकर आश्चर्यचकित हुए कि उनका मन राम में बलपूर्वक खींच गया था। उन्होंने महसूस किया कि वही निर्गुण निराकार ब्रम्ह, सगुण साकार भगवान बनकर मानव रूप में आया है और चूँकि सगुण साकार भगवान निर्गुण निराकार ब्रम्ह की तुलना में अधिक सुखद है, उनका भगवान राम के दिव्य आनंद के की ओर आकर्षित हुआ था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

उद्धव एक महान संत थे और निराकार ब्रम्ह का दिव्य आनंद हासिल कर चुके थे। भगवान कृष्ण उद्धव को ईश्वर का दिव्य प्रेम का रस देना चाहते थे। लेकिन उद्धव ने कभी नहीं सोचा था कि उन्हे और किसी चीज की जरूरत है क्योंकि उनके पास निर्गुण निराकार ब्रम्ह की शाश्वत और अनंत खुशी मौजूद थी। एक बार ऐसी खुशी प्राप्त हो जाने के बाद, कोई और कुछ नहीं करना चाहता। इसलिए भगवान कृष्ण ने फैसला किया कि उद्धव को गोपियों के पास भेजा जाए, जिनसे उद्धव को ईश्वरीय प्रेम आनंद का अनुभव प्राप्त होगा। भगवान कृष्ण ने उद्धव से कहा, "वृंदावन की गोपियाँ मुझे बहुत प्यार करती है। मेरे विरह में जल रही है। तुमको तो पता हैं कि मुझे बहुत महत्वपूर्ण कार्य करने हैं। मुझे उन कार्यों को सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए पूरा करने की आवश्यकता है। मैं वहा वापस नहीं जा सकता। तुम उन्हें ब्रम्हज्ञान देकर आओ।"

तो उद्धव वृंदावन गए और गोपियों से मुलाकात की जो उन्हें राधा के पास ले गयी। उद्धव ने उनसे कहा, "तुम इतने दुःखी क्यों हो? आप उचित भोजन नहीं खा रही हो। आप बहुत पीली और कमजोर हो गयी हो। कृष्ण

कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। वह प्यार और लगाव की सभी भौतिक भावनाओं से परे है। वह वही परमेश्वर है जो इस ब्रह्मांड के प्रत्येक कण कण में व्याप्त है। यदि आप इसे समझेगी, तो आप अनंत दिव्य आनंद का अनुभव करेंगी। फिर वियोग कैसा? दुःख से बाहर आओ और हमेशा के लिए खुश रहो। "

गोपियों ने जवाब दिया," हमारा मन कृष्ण के साथ है और कुछ भी हमारे दिमाग में प्रवेश नहीं कर सकता क्योंकि मन पहले से ही दिव्य प्रेमानंद से लबालब भरा हुआ है। और इससे बढकर कोई अन्य आनंद नहीं है। तुम्हे इस दिव्य प्रेम आनंद का अनुभव नहीं है। हम उस दिव्य प्रेम को आपके दिल में डाल देंगे और फिर इसे स्वीकार करना या इसे अस्वीकार करना आपकी पसंद पर निर्भर है। "

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जब उद्धव ने दिव्य प्रेम आनंद का आस्वादन किया तो उसने पाया कि निराकार ब्रह्म का आनंद भगवान के दिव्य प्रेमानंद के सामने तृणवत तुच्छ है।

लौटने के बाद उद्धव ने भगवान कृष्ण से कहा, "कृपया मुझे वृंदावान में वृक्ष, लता बनाएं, ताकि मैं भी दैवीय प्रेमानंद का रसपान कर सकूं। "

निष्कर्ष ये है कि जिनके पास निर्गुण निराकार ब्रम्हानंद है, वे सगुण साकार भगवान द्वारा आसानी से आकर्षित हो जाते है, लेकिन जिनके पास सगुण साकार भगवान का प्रेमानंद है, वे निर्गुण निराकार ब्रम्हानंद को तृणवत् मानकर उसके आसपास भी नही फटकते है। इसलिए श्रीकृष्ण सर्वोच्च उपास्य है।